बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com

रतन के आभूषणप्रेम के पीछे गहरी व्यथा

प्रेमचंद में आधुनिक प्रणाली का 'फ्रायडियन' मनोविज्ञान नहीं मिलता, बल्कि उन्होंने मनोविज्ञान का व्यावहारिक पक्ष ग्रहण किया और उसी का अपने उपन्यासों में उपयोग किया। अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उन्होंने पात्रों की गूढ़ मनःस्थित मध्यमवर्ग की नारी का आभूषण–प्रेम रतन में भी है, किंतु रतन के इस आभूषण–प्रेम के पीछे एक गहरी व्यथा है। जब उसके यौवन के दिन थे, तब उसका विवाह पचासवर्षीय बूढ़े वकील से कर दिया। भाग्य की विडंबना। उसे खाने, पीने, पहनने को तो सब कुछ मिला, किंतु किससे? पति? नहीं: पति–प्रेम के स्थान पर उसे वात्सल्य मिला। रतन का मन इस दुःख को भुलाने के लिए गहनों की ओर बढ़ा तो क्या आश्चर्य अनमेल विवाह में नारी के इस मनोविज्ञान का प्रेमचंद ने सूक्ष्मता से वर्णन किया है। रतन की दशा एक ऐसे सवार जैसी है जिसका घोड़ा मरियल है, किंतु पाथेय की सब सुविधाएँ होने से वह मंजिल तक पहुँच जायेगी। प्रेमचंद के शब्दों में–''वह उस गाय की तरह थी जो एक पतली–सी पगहिया के बंधन में पड़कर अपनी नाँद के भूसे–खली में मग्न रहती है। सामने हरे–भरे मैदान हैं, उसमें सुगधमन घासें लहरा रही हैं पर वह पगहिया तुड़वाकर कभी उधर नहीं जाती।'' आगे वे कहते है–''यौवन को प्रेम की इतनी क्षुधा नहीं होती जितनी आत्म–प्रदर्शन की। प्रेम की क्षुधा पीछे आती है। रतन को आत्म–प्रदर्शन के सभी साधन मिले हुए थे।

नारियों में चरित्र के विषय में संदेह की मात्रा कुछ अधिक हुआ करती है। जालपा ने संदेहवश रमानाथ की जेब से निकला पात्र लौटाने से इन्कार कर दिया था। रतन को भी रमानाथ के भागने पर सही संदेह होता है कि कहीं वह किसी और स्त्री के चक्कर में तो नहीं है। रतन का यह संदेह जालपा को उस समय भी उत्तेजित कर देता है जब वह अपने

कंगन के दिए गए रूपयों को रमानाथ द्वारा खर्च कर दिए गए समझती है। प्रेम में अतृप्त मनुष्य अन्य साधनों की ओर दौड़ता है। रतन बेचारी तो बचपन से अनाथ थी। यौवन में पति का प्यार न मिल पाया तो उसने जालपा से बहनापा जोड़ लिया। उसकी इस अवस्था

का बड़ा मार्मिक उद्‌घाटन उस समय होता है। जब इंद्रभूषण वकील मरणासन्न है। अनिष्टशँका स्त्रियों में होती भी कुछ अधिक है। रतन किसी ज्योतिषी को बुलाने का आदेश देती है। वह अकेली थी और उस पर मुसीबतों का पहाड़। बेचारी विधवा हुई थी कि भतीजे के षड्‌यंत्रों का शिकार हो गई। निरंतर सताये जाने पर आखिर उबल पड़ी। मध्यवर्ग के सम्भ्रांत परिवारों की नारी भी कितनी विवश है। रतन का संयुक्त परिवार को कोसना ऐसी परिस्थिति में स्वाभाविक ही है।

प्रेमी–जनों से वियुक्त होने पर ही उनका मूल्याकंन हुआ करता है। यौवन के मद और आत्म–प्रदर्शन में बेसुध रतन को वकील साहब के मरने के बाद उनके प्रेम का सच्चा मूल्य ज्ञात हुआ। अतः अब पश्चात्ताप करना प्राकृतिक था।